क्या लिखूँ? (पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी)

कठिन शब्दार्थ

- **उमंग:** जोश, उत्साह या मन का उल्लास
- **स्फूर्ति:** फुरती, चेतना या सजगता
- **आवेग:** बिना सोचे-विचारे कुछ कर बैठने की अंतःप्रेरणा या मानसिक झोंक
- **यथार्थता:** सत्य, वास्तविकता या प्रामाणिकता
- **उत्थित:** उत्पन्न होना या मन में जागृत होना

सरल व्याख्या

लेखक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी निबंध लेखन की जटिल प्रक्रिया को समझाने के लिए अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबंधकार ए.जी. गार्डिनर के एक विशिष्ट मत का उल्लेख करते हैं। गार्डिनर का मानना है कि निबंध लिखने के लिए एक विशेष मानसिक स्थिति (मूड) का होना अनिवार्य है। जब मन में एक विशेष उमंग उठती है, हृदय सजग होता है और मस्तिष्क में विचारों का एक तीव्र आवेग पैदा होता है, तब लेखक को न चाहते हुए भी लिखना ही पड़ता है। उस समय विषय की कोई महत्ता नहीं रह जाती; लेखक अपने आंतरिक आवेग को किसी भी साधारण विषय में भर देता है। इसे स्पष्ट करने के लिए उन्होंने 'हैट और खूँटी' का सुंदर सिद्धांत दिया है—जिस प्रकार हैट (टोपी) टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम आ सकती है, उसी प्रकार मन के सुंदर भावों को टाँगने या व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय केवल एक खूँटी का कार्य करता है; असली मूल्यवान वस्तु 'हैट' (मन के भाव) है, खूँटी (विषय) नहीं।

लेखक बख्शी जी बड़ी सहजता से स्वीकार करते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में कभी ऐसी स्वतः स्फूर्त मानसिक स्थिति का अनुभव नहीं किया जहाँ भाव अपने आप उमड़ आते हों। उन्हें तो एक-एक निबंध लिखने के लिए बहुत सोचना पड़ता है, चिंता करनी पड़ती है और भारी मानसिक परिश्रम करना पड़ता है। आज उनके सामने एक विशेष धर्मसंकट है क्योंकि उन्हें नमिता और अमिता नामक दो बालिकाओं के लिए परीक्षा के दृष्टिकोण से दो अलग-अलग विषयों—'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' और 'समाज-सुधार'—पर एक आदर्श निबंध लिखना है और उन्हें निबंध-रचना का गुप्त रहस्य समझाना है।

खंड 2: निबंधशास्त्र के शास्त्रीय नियम, विभिन्न शैलियाँ और खुसरो की अनमेली पद्धति

कठिन शब्दार्थ

- **विज्ञ:** जानकार, समझदार या विद्वान
- **अनुसंधान:** अन्वेषण, खोज या गहन जाँच-पड़ताल
- **दुर्बोधता:** जो शीघ्रता से समझ में न आए, गूढ़ या क्लिष्ट

- **गांभीर्य:** गंभीरता, गहराई या चित्त की स्थिरता
- **गुत्थी:** उलझन, जटिलता या मानसिक कठिनाई
- **स्वच्छंद:** बंधनों से मुक्त, स्वतंत्र या अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला

सरल व्याख्या

लेखक निबंध लेखन की सही दिशा खोजने के लिए निबंधशास्त्र के आचार्यों के कड़े नियमों का मूल्यांकन करते हैं। एक आचार्य के अनुसार आदर्श निबंध हमेशा छोटा होना चाहिए, क्योंकि बड़े निबंधों में कलात्मक सुंदरता और कसावट को बनाए रखना अत्यंत कठिन होता है। निबंध के दो मुख्य स्तंभ होते हैं—सामग्री (कंटेंट) और शैली (प्रस्तुतीकरण)। लेखक के पास तात्कालिक रूप से न तो कोई विश्वकोश है और न ही कोई संदर्भ ग्रंथ, इसलिए उन्हें पुस्तकालय जाकर अनुसंधान करने का समय नहीं मिला और उन्हें केवल अपने ही संचित ज्ञान पर भरोसा करना है। आचार्य यह भी कहते हैं कि लिखने से पहले रूपरेखा (आउटलाइन) बनानी चाहिए, परंतु लेखक बताते हैं कि रूपरेखा बनाना उनके वश का नहीं है, क्योंकि शेक्सपीयर और गार्डिनर जैसे महान रचनाकारों को भी अपने नाटकों और लेखों का नामकरण और रूपरेखा तय करने में सबसे अधिक कठिनाई होती थी।

शैली के संबंध में शास्त्रीय नियम यह है कि भाषा प्रवाहपूर्ण हो और वाक्य छोटे तथा एक-दूसरे से जुड़े हों। परंतु लेखक मज़ाकिया लहजे में कहते हैं कि वे पेशे से एक 'मास्टर' हैं, इसलिए अपनी विद्वता का प्रदर्शन करने के लिए उनके वाक्य कम से कम आधे पृष्ठ लंबे होने चाहिए। संस्कृत के बाणभट्ट (कादंबरी), श्रीहर्ष और सेनापति ने भी अपने काव्यों में जान-बूझकर दुर्बोधता और वैचारिक गुत्थियाँ डाली थीं ताकि गंभारीय और पांडित्य का प्रदर्शन हो सके। अंततः लेखक अंग्रेजी के निबंधकार 'मानटेन' की पद्धति को सबसे उपयुक्त मानते हैं, जिन्होंने किसी शास्त्रीय कसौटी की परवाह किए बिना, जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसे अपने मन की स्वच्छंद चेतना और सच्ची अनुभूति के साथ लिपिबद्ध कर दिया। बख्शी जी को महान कवी अमीर खुसरो की 'अनमेली' पद्धति (चार विपरीत फरमाइशों—खीर, चरखा, कुत्ता और ढोल को एक ही पद्य में जोड़ना) याद आती है और वे दोनों कन्याओं के अलग-अलग विषयों को एक ही निबंध में पिरोने का साहसिक निर्णय लेते हैं।

खंड 3: 'दूर के ढोल सुहावने' और 'समाज-सुधार' का वैचारिक अंतर्संबंध

कठिन शब्दार्थ

- **कर्कशता:** कानों को चुभने वाली कठोर या तीखी ध्वनि
- **कलरव:** कोमल या मधुर ध्वनि
- **क्षुब्ध:** अशांत, व्याकुल या बेचैन
- **प्रगतीशील:** निरंतर विकास की ओर बढ़ने वाला या आगे बढ़ता हुआ
- **अतीत:** बीता हुआ समय या भूतकाल

सरल व्याख्या

लेखक स्पष्ट करते हैं कि 'दूर के ढोल सुहावने' क्यों लगते हैं; इसका कारण यह है कि ढोल की जो कर्कश और कानफाड़ू ध्वनि होती है, वह हवा के घर्षण के कारण दूर तक नहीं पहुँच पाती। ढोल के समीप बैठे लोगों के तो कान के पर्दे फटते हैं, परंतु दूर किसी नदी के शांत तट पर संध्या समय बैठे व्यक्ति के कानों में वही ध्वनि अत्यधिक मधुरता का संचार करती है। वह व्यक्ति उस मधुर ध्वनि के आधार पर अपने मन में किसी के विवाहोत्सव के आनंद, नव-वधू के लज्जा, संकोच, आशंका और उल्लास से भरे स्पंदन का एक मनमोहक काल्पनिक चित्र अंकित कर लेता है। यह प्रसंग सिद्ध करता है कि दूर रहने से हमें जीवन की कड़वी और कठोर यथार्थता का तीखा अनुभव नहीं होता।

यही कारण है कि जो तरुण (युवा) अभी वास्तविक जीवन-संग्राम की कड़वाहट से दूर हैं, उन्हें यह संसार बड़ा ही हसीन और मनमोहक लगता है। दूसरी ओर, जो वृद्ध हो चुके हैं, वे अपनी युवावस्था से दूर आ चुके हैं, इसलिए उन्हें अपने बीते हुए समय (अतीत) की स्मृतियाँ बहुत सुखद और गौरवमयी लगती हैं। तरुणों की आँखें भविष्य के उज्ज्वल स्वप्न देखती हैं और वृद्धों की आँखें अतीत के गौरव के संरक्षण में डूबी रहती हैं। इन दोनों को ही वर्तमान काल से भारी असंतोष होता है। तरुण वर्तमान को बदलकर भविष्य को लाना चाहते हैं (क्रांति के समर्थक) और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं (संरक्षक)। युवाओं की क्रांति और वृद्धों के प्रतिरोध के इस वैचारिक टकराव के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी उथल-पुथल से हर युग में 'समाज-सुधार' का जन्म होता है। बुद्ध, महावीर, कबीर, नानक से लेकर महात्मा गांधी तक सुधारों का यह सिलसिला अनवरत चलता आ रहा है क्योंकि समाज में नए-नए दोष आते रहते हैं और उनका नव-सुधार करना पड़ता है। अंत में, आज का प्रगतिशील साहित्य भी कल अतीत का स्मारक बन जाएगा, क्योंकि समय परिवर्तनशील है और दूर के ढोल हमेशा सुहावने ही रहेंगे।